जो भगवान की भी पसंद हैं...

- राजयोगी ब्र.कु. सूर्य,माउण्ट आबू

जिन्होंने सम्पूर्ण पवित्रता को धारण करके अपना सर्वस्व ईश्वरीय कार्य में स्वाहा कर दिया था। 25 अगस्त 2007 को वे अपना नश्वर देह त्यागकर महान परमात्म कार्य के लिए अन्यत्र चली गईं।

यूँ तो इस धरा पर अनेक महानात्माओं का अविर्भाव हुआ और होता रहेगा, परंतु वे एक ऐसी महानात्मा थीं जिन्होंने अनेकों को महान बनाया, लाखों लोगों को प्रभु-मिलन कराया और परमात्मा के महान कार्य का सफलता व कुशलता पूर्वक संचालन किया। आज भी प्रतिदिन अनेकों के मानस पटल पर उनकी छवि उभर आती है और 25 अगस्त को तो सारा ब्राह्मण परिवार उनके प्रेम व अपनेपन को स्मरण करके भावविभोर हो जाता है। उनकी याद में निर्मित प्रकाश-स्तम्भ प्रतिदिन असंख्य ब्राह्मणों को योग की दिव्य अनुभूतियाँ कराता है।

कुशल प्रशासक

कुशल प्रशासक के साथ वे समस्त ब्राह्मण परिवार की स्नेहमयी दादी भी थीं। आज उनकी अनुपस्थिति विशाल ब्राह्मण परिवार में एक रिक्तता का आभास कराती है। वे निर्मल, निष्काम व आत्मिक प्रेम की प्रतिमूर्ति थीं। प्यार बांटना उनका प्रमुख कर्त्तव्य था। जब लोगों से गलती भी हो जाती थी तो वे प्यार का प्रसाद देना नहीं भूलती थीं। उनकी शिक्षाओं में भी कल्याण का भाव व प्यार समाया होता था। वे चाहती थीं कि भगवान का ये परिवार पवित्रता व प्रेम से भरपूर हो। लगभग 20 वर्ष पूर्व पाण्डव भवन में महामण्डलेश्वरों का एक धर्म सम्मेलन रखा गया था जिसमें अनेक संत-महानात्माओं ने हिस्सा लिया। दादीजी ने सभी को अपने पावन प्रेम में बांध लिया था। विरोधी सहयोगी बन गये और ग्लानि करने वाले प्रशंसक बन गये। एक प्रसिद्ध महामण्डलेश्वर ने तो मंच से भरी सभा में कह दिया कि मैं तो पूरा जीवन बाबा को व दादी को गाली ही देता आया हूँ। आज मुझे पता लगा कि वे कितनी महान हैं। उन्होंने अपना अनुभव सुनाते हुए दिल को स्पर्श करने वाली बात कही कि आज सवेरे जब दादीजी हमें सारे आश्रम में घुमा रही थीं तो मैंने दादीजी का हाथ स्पर्श किया और मैं नतमस्तक हो गया दादी जी के पवित्र वायब्रेशन्स को महसूस करके। ऐसी पवित्र आत्मा को इस धरा पर ढूंढ़ना भी असंभव है। आज से मैं दादी का भाई हूँ और दादी का जब भी बुलावा होगा, मैं दौड़ा चला आऊंगा। जितनी ग्लानि आज तक मैंने की है, अब उससे सौ गुणा प्रशंसा के पुष्प चढ़ाऊंगा। उन्हें इस तरह समर्पित होता देख, सभी धर्म धुरंधर नतमस्तक हो गये। ऐसी थीं ब्राह्मण परिवार की आत्मा दादी प्रकाशमणि।

जिनकी मुस्कान अनेकों के कष्ट हर लेती थी, जिनकी दृष्टि पाने के लिए लोगों के कदम रुक जाते थे, जिनके सफल प्रशासन को देख सभी प्रशासनिक अधिकारी उनसे यह कला सीखना चाहते थे, जिनकी पवित्रता व सरलता पर स्वयं भगवान भी बलिहार जाते थे, जिन्होंने अनेकों को जीवन दान दिया, जिन्होंने प्यार देकर अनेकों को जीना सिखाया - ऐसी थी महान दादी प्रकाशमणि।

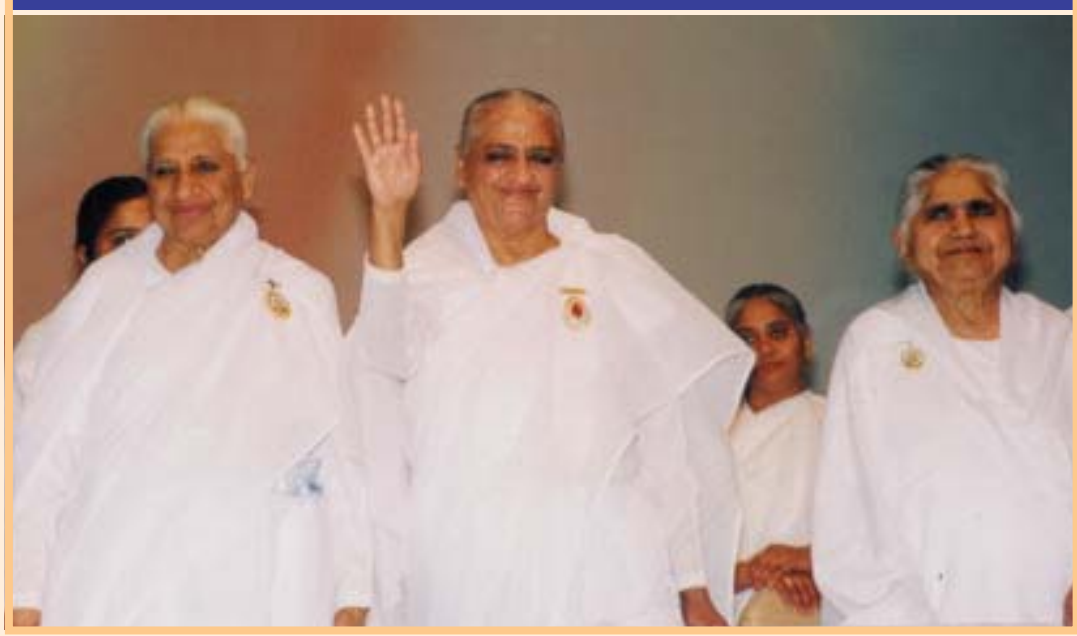

प्रेम की देवी

बहुत वर्ष पहले की बात है। हमारा ये रूद्र ज्ञान यज्ञ बहुत छोटा था। प्रथम बार 45 पत्रकार हमारे एक छोटे से सम्मेलन में आये। हिस्ट्री हॉल में दादीजी ने शब्दों से उनका इतना भावपूर्ण सत्कार किया कि वे मंत्रमुग्ध हो गये, उनकी यात्रा की थकान उतर गई, उन्हें लगा कि दादी तो हमारी है और अगले ही दिन भारत के अनेक अखबारों में छपा- 'प्रेम की देवी - दादी प्रकाशमणि'। हम भोजनालय में सेवारत थे। हम छोटे थे, हमें भोजन तो अति स्नेह से व सिखाने की भावना से सिखती थीं। हमसे गलती होती थी तो वे हमें डांटती नहीं थीं। हँसते-हँसते कहती थीं - आज तो ये डालना भूल ही गये। हम कभी-कभी नुकसान भी कर देते थे, परंतु हमें समझाते हुए इतना हल्का कर देती थीं जो हम उस नुकसान की भरपाई में लग जाते थे।

मुरली में रस भर देती थीं

हमने अत्यधिक सुख उस समय प्रतिदिन पाया, जब वे सवेरे भगवान के महावाक्य (मुरली) सुनाती थीं। उन्हें ये वरदान था। वे मुरली में रस भर देती थीं। सभा में परम आनंद की लहर छा जाती थी। हमारा वो एक घण्टा जैसे कि पावरफुल योग में बीतता था।

चलता-फिरता फरितश्ता थी

वे चलता-फिरता फरिश्ता थीं। प्रारंभ में वे यज्ञ के सभी विभागों में जाती थीं, उन्हें अपनापन देती थीं, सबसे पूछती थीं - कुछ चाहिए। उनके ये शब्द सुनकर सबकी चाहना ही लोप हो जाती थी। सभी आश्चर्यवत होकर उन्हें निहारने लगते थे। जब वे बीस हज़ार की सभा में पूछती थीं - बोलो क्या खाआगे, आइसक्रीम खाओगे? सभी उनकी उदारता व अपनेपन के समक्ष सिर झुका देते थे। सचमुच वे ही योग्य पात्र थीं इस महान आत्माओं के विशाल परिवार की मुखिया बनने के।

भगवान स्वयं उन्हें न केवल प्यार करते हैं बल्कि उन्हें बहुत सम्मान देते हैं

लोग तो भगवान को प्यार करते हैं। अनेक ब्रह्मावत्स भगवान का प्यार पाने के इंतज़ार में रहते हैं, परंतु हमने देखा, भगवान स्वयं उन्हें न केवल प्यार करते हैं बल्कि उन्हें बहुत सम्मान देते हैं। निःसंदेह दादीजी भी श्रेष्ठ योगी थीं, परमात्म-प्यार में मगन रहने वाली थीं, परंतु बाबा का उनसे मिलन देखकर 'अबू मिन आदम' की कहानी मानस पटल पर उभर आती थी। सुना होगा आपने - अबू के स्वप्न में एक फरिश्ता आया, जिसके हाथ में एक लिस्ट थी। अबू ने पूछा, ये क्या है? फरिश्ते ने उत्तर दिया, ये उन लोगों की लिस्ट है जो भगवान को बहुत प्यार करते हैं। अबू ने पूछा, इसमें मेरा नाम कहाँ है? 'सबसे अंत में' - यह कहकर फरिश्ता लोप हो गया। दूसरी रात एक लिस्ट के साथ फरिश्ता पुनः प्रकट हुआ और अबू ने पुनः पूछा, आज किनकी लिस्ट है? फरिश्ते ने फरमाया कि 'ये लिस्ट उनकी है जिन्हें भगवान बहुत प्यार करता है, इसमें सबसे ऊपर आपका ही नाम है', यह कहकर फरिश्ता अदृश्य हो गया। यह सुनकर अबू प्रभु-प्रेम में मग्न हो गया।

बाबा ने समस्त शक्तियाँ दे दी थी

ये वृत्तांत पूर्णतया सत्य है दादी प्रकाशमणि के लिए। क्यों उन्हें भगवान इतना प्यार करता था जो अव्यक्त होते समय बाबा ने उनका हाथ पकड़कर उन्हें अपनी समस्त शक्तियाँ दे दी थी। क्योंकि वे निर्मल थीं, वे अनासक्त थीं, वे त्यागी व परोपकारी थीं। उनका चित्त सभी के लिए शुभ-भावनाओं से भरा था, वे निर्विकारी थीं। उन्होंने भगवान द्वारा रचित रूद्र यज्ञ को सफल बनाया था, उसमें आने वाले विघ्नों को समाप्त किया था। सचमुच वे यज्ञ रक्षक थीं। वे चाहती थीं कि प्रत्येक यज्ञ-वत्स संतुष्ट रहे, योगी बनकर रहे, व्यर्थ से मुक्त रहे। सब एक-दूसरे को सुख देते रहें, संतुष्ट करते रहें। सब यज्ञ सेवा से अपना भाग्य चमकाते रहें। हम यज्ञ-वत्स उनकी इन शुभ-कामनाओं को पूर्ण करके उनकी श्रेष्ठ पालना का रिटर्न देंगे।

हे विश्व की आधारमूर्त, आपको कोटि-कोटि नमन्! हे जहान के नूर, आपको बारंबार नमन्। हे असंख्य आत्माओं के दिल के दीपक आपको शत् शत् नमन्। सारा विश्व आपका ऋणी है। हम इस पुण्य स्मृति दिवस पर आपको श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं। हम अवश्य ही आप समान सच्चाई व निरहंकारिता को धारण करते हुए आपके सपनों को साकार करेंगे।